श्री रणवीर-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्

काश्मीर-शैवदर्शन-विभाग :

प्रवेश संख्या 59--- विषय :- कश्मीर शैवदर्शनम् क्रम सं. --22---

नाम - वातुल नाथ सूत्र टीका - ग्रन्थकार नाम -------------

पत्र सं. --9--- अक्षर सं. (पंक्तौ) शब्द -10--- पंक्ति सं. (पृष्ठे)- 16----

आकारः 7.2"X 9"----- लिपिः --शारदा- आधारः -कागज़------

वि. विवरणम् ---पू-------

पर्यवेक्षक :------------- दिनांकः 16-9-2000

56.

No 59

M.K. Marwaha

20/

'𑆑𑆶𑆬𑆤𑆳𑆡𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆛𑆵𑆑𑆳'

सं० 22 वातूलनाथसूत्रटीका No 59

ॐ नमः परमशिव[illegible]क्राय ॥ ॐ महासाहसवृत्त्या स्व
रूपलाभः १ तद्रश्मिचक्र[illegible]प्रवृत्तिः २
युगलक[illegible]नादनुत्तरप्रवेशः ३ [illegible]
[illegible] ४ सिद्धयोगिनीसंघट्टान्महामे
लापोदयः ५ [illegible]
प्रवृत्तिः ६ [illegible] ७
[illegible] ८ ॥
[illegible] ९ [illegible]
[illegible] १० [illegible]
[illegible] ११ [illegible]
[illegible] १२ [illegible]
[illegible] १३ ॥ इति श्रीमद्वातूलनाथी
य [illegible] समाप्तमिति शिवम् ॥
ॐ [illegible] निर्विकल्प [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

येविश्वमखिलंस्रुजःसृजते ॥१॥ मुमुक्षुपदज्ञातत्त्वंति
क्लीयते निर्विकल्प निर्विकल्पेन्द्रियनिरुद्धविश्रान्तपादसन
ठमि उल्लसत्क्षिप्तलन्मकस्वभावस्य विकल्पसमुत्थस्य
वल्गनं मध्यान्ह भट्टाचार्येनान्यस्य भवभावप्रभृत्यानुग
यन्त्री धर्मेभिस्थितं भैरवमाश्रितं नाम भूतपञ्चभवाख्य कि
चिन्तापरि ली समस्तवल्गियं वाया विकल्पनुरागयन्त्री
सिद्धप्रत्यक्षमुक्ती प्रियमद्भुतं भैरवं सङ्कल्पविकल्पविकल्प
विश्वय भट्टोत्तिष्ठ मिं धीरत्वद्वी वल्गपद्यं सिद्धिकल
टयेनानुरागयन्त्री महाभट्ट किञ्चित् भैरव टङ्कः तत्त्व
ईश्वरानन्द भेद रतीभती वल्गवित्रय भवस्फोका ईश्वरानन्द
मं स्वकारयन्त्री तुरा ईश्वर समस्त विश्व स्वभावरूपतापायन्त्री
वैयगीकृत्य तत्त्वं निजकसारं विद्धमण्डल ज्ञातृस्यसमस्त
मनिरुद्धयास्वभावे व्यवभीर्व ज्ञानवल्लातु यथेष्टयस्वरूप
व. भस्म तत्स्वयविश्वमोऽसौस्थितं स्यात् यः स्वभावं रूपरूपतया
मन्देवा विश्वमल्लमत्त शान्तः स्वभूसिद्धः नानुगुणतील
विकल्प भवन्निष्ठा भवत्वः मविकल्प निर्विकल्प संविल्लील
सु. पाविविधस्य भववकामिं भवस्वकानां स्वरूपकारीत
८
तः

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

सहजः सहजैव श्रितं इति सङ्कल्पज्ञः ॥ १० ॥ ॥
इत्यकालमिद्धं सहजैव निरवकाल्यसहजमार्वनं सुखम
वेदनयमनमापुरुष्केन्द्रियमनं सदा धात्वेकसंयुक्तं इति
तु भवति ॥ ॥ सदा धात्वेकेन्द्रियविनिवृत्तः सहजैवसः ॥ ॥ ११ ॥

सदा धात्वेकं ज्ञानं श्रितं वज्रते न्यस्तं सहजं भूतं सदा ज्ञापक
सुखं यत् स्येन्द्रियं नियत नियतसङ्कल्पसर्वदा तो निर्वि
कल्पसुखम् उत्सर्गसुमिदं इति निवृत्तं सहजैवसः
सुखं व सातं सान्द्रवेदनयं तु यः सहजसुखं यदि वलित
सहजैवसत्त्वं निरुक्ता सहजैवसत्त्वं वर्धमानं इत्यर्थः ।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मीलः

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ०० ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ०४ ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
5 [illegible]

[illegible]

[illegible] इति शिवम्॥ ॥ ॥

इति [illegible]

[illegible] ॥ ॥

समाप्तेयं श्री [illegible]

[illegible] इति शिव

म्॥ ॥